

विनियोग संख्या 62 - भारत का उच्चतम न्यायालय
APPROPRIATION No. 62-SUPREME COURT OF INDIA

| | कुल विनियोग Total appropriation | वास्तविक व्यय Actual expenditure | बचत- Saving- |
|------------------------------|---------------------------------------|--|---|
| | | | (हजार रुपयों में) (In thousands of rupees) |
| राजस्व: | Revenue: | | |
| प्रभारित- | Charged- | | |
| मूल | Original 53,26,00 | 56,74,00 | 52,92,73 |
| पूरक | Supplementary 3,48,00 | | |
| वर्ष के दौरान अभ्यर्पित राशि | Amount surrendered during the year | | 3,80,25 |

टीका और टिप्पणियां**Notes and comments**

1. विनियोग में, कुल बचतें (381.27 लाख रु.) मार्च, 2008 में प्राप्त किए गए, 348.00 लाख रु. के पूरक विनियोग से अधिक हो गईं और यह कुल स्वीकृत विनियोग का 7 प्रतिशत थीं।

1. In the appropriation, the overall savings (Rs.381.27 lakhs) exceeded the supplementary appropriation of Rs.348.00 lakhs obtained in March, 2008 and constituted 7 percent of the total sanctioned appropriation.

बचत निम्नलिखित मुख्य शीर्ष के अंतर्गत हुई:-

Saving occurred under the following major head:-

(लाख रुपयों में)
(In lakhs of rupees)

| शीर्ष | Head | | |
|--------------------|---------------------------|---------|---------|
| मुख्य शीर्ष "2014" | Major Head "2014" | | |
| न्याय प्रशासन | Administration of Justice | | |
| मू. | O. | 5326.00 | 5293.75 |
| पू. | S. | 348.00 | |
| पु. | R. | -380.25 | |

(I) "उच्चतम न्यायालय - स्थापना" के अंतर्गत 5326.00 लाख रु. के मूल विनियोग को 348.00 लाख रु. का पूरक विनियोग प्राप्त करके बढ़ाकर 5674.00 लाख रु. कर दिया गया, तथापि, रिक्त पदों को न भरे जाने और सेवानिवृत्त अधिकारियों के वेतन एवं भत्तों के बकाया के बिल प्राप्त न होने के कारण 381.27 लाख रु. (पूरक विनियोग सहित) की बचत हुई।

(I) Under "Supreme Court - Establishment" - the original appropriation of Rs.5326.00 lakhs was augmented to Rs.5674.00 lakhs by obtaining supplementary appropriation of Rs.348.00 lakhs. However, there was a saving of Rs.381.27 lakhs (including supplementary appropriation) - due to non-filling up of vacant posts and non-receipt of bills of arrears of pay and allowances of retired officers.